

DPN 6096

Title : ~~विस्वचिका विधि~~ (~~वशिष्ठ रामायणान्तर्गता~~) VISŪCIKĀ-
VIDHI (VASISṬHA RĀMĀYANĀNTARGATĀ)

Run. No. 678 7

Cat. No. 30

Micro. No.

Subject ~~Tāntrika Karma~~ Religion : Hindu Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / ^{Kānda} Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 20 x 10

Folios 2

Lines (in a page) 5/6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

पशुप्रतिमान पःमाय

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon : ~~विस्वचिका निवर्तको मंत्रो~~ वशिष्ठ रामायणे

~~उत्पत्तिप्रकरणे~~ सप्ततितमाध्याये ~~प्रदर्शितः ॥ ॥~~

~~इति विस्वचिकामाजनिवीची ॥~~

श्रीराम

श्रीराम

॥१॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ विसृचिका निवर्तको मंत्रो वाशिष्ठ
रामायणे उत्पत्तिप्रकरणे सप्रतिरामायणे प्रदर्शितः ॥ ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं विष्णुशक्तये नमः ॥ ॐ नमो भगवति विष्णुश
क्तिमैनां ओं हर हर नय नय पच पच मथ मथ उत्सादयोत्सा
दय दूरे कुरु स्वाहा हिमवतं गच्छ जीवः सः सः सः चन्द्रमण्ड

॥१॥

लग्नोत्पत्तिस्वाहा ॥१॥ अथ विधि ॥ इति मंत्रो महा मंत्र न्यस्य वा
मकोदरे ॥ मार्जयेदातुराकारं तेन हस्तेन संयुतः ॥ हिमशैला
भिमुखेन विदुतांतां विचिंतयेत् ॥ कर्कटी कर्कसाक्रंदां मंत्रमु
द्गरमर्दिताम् ॥ आतुरं चित्रं ये च देवसाय न हृदि स्थितं ॥ अ
जरामरणं युक्तं मुक्तं सर्वा विविभ्रमे ॥ साधको हि शुचिर्भूत्वा
स्वाचांत सुसमाहितः ॥ क्रमेणानेन सकलां प्रोक्षितं विस्मृ

॥२॥ चिकां ॥ श्री ॥ पवित्र भै आचमन गरि सावधान पै हूले आ
को मंत्र लाई वा म हस्त मा श्री खण्ड का चन्दन लेले खनु मै हात
लेगे गिलाई मार्जन गर्नु कर्कटी ही मालय तिर भा गदी सा है क
रु उदि मंत्र रूपि मुझे लेकु टीया कि ध्यान गर्नु ऐ गिलाई पनि
जर मरण ले रहित भया को सावधान भया को मन मा झुपावे
थाले छाया को ध्यान गरि मार्जन गर्नु ॥ १०८ ॥ १००८ ॥ ज्यथा श
क्ति वा ॥ इति विमुचिका मार्जन वीची ॥

॥२॥